मां की याद में टपके आंसुओं ने अभिनेता बना दिया!

फिल्म शोला और शबनम, प्रेम ग्रंथ, सरफरोश, विरासत, लावारिस, सत्या, ओ माय गॉड टू, पुकार, बैंडिड क्वीन जैसी अनेकों फिल्मों में अपने अभिनय से कलाकार गोविन्द नामदेव ने बालीवुड में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई .

साक्षात्कार
गोविन्द बड़ोने

सागर (मप्र) में 03 सितंबर 1950 में जनमें गोविन्द नामदेव को मां के प्रति प्रेम, अनुराग और मां के नाम पर आंख से टपके आंसुओं ने बालीवुड का सफल चरित्र अभिनेता बना दिया. 'नवभारत' से चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि मैंरा सब कुछ मां का दिया हुआ है. 1975 में किसी अखबार में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) में प्रवेश का विज्ञापन आया. प्रवेश मिलने पर स्कालरशिप मिलने का प्रावधान था. स्कालरशिप की चाहत से एनएसडी में प्रवेश लेने का मन बनाया. इसमें प्रवेश के लिये चयनकर्ताओं के समक्ष कोई प्रस्तुति देना अनिवार्य था. गोविन्द नामदेव ने एक ऐसी सोलो परफामेंस प्रस्तुत की जिसमें कैसे एक अबोध बालक अपनी मां से दूर रहकर संघर्षो के साथ पढ़ाई करता. खुद पर केंद्रित इस परफामेंस को करते हुए गोविन्द नामदेव इतने भावुक हो गये कि आंखों से आंसुओं की अविरल धारा बह निकली. इस प्रस्तुति को देख चयनकर्ताओं ने उन्हें सिलेक्ट कर लिया. बस यहीं से श्री नामदेव के कला जगत में प्रवेश की कहानी शुरू हुई. इस यात्रा के 50 वर्ष पूरे हो चुके है. इन पचास वर्षो में गोविन्द नामदेव ने थियेटर, फिल्म, नाटक के सैकड़ों मंचों पर अपनी कला की श्रेष्ठतम प्रस्तुति दे अपनी अमिट छाप छोड़ी. दिल्ली तक पहुंचने में श्री नामदेव को उनके पिता के आभामंडल ने प्रेरित किया. बालमन पर जीवन के चलचित्र किस प्रकार असर डालते है यह कहानी भी अद्भुत है. आपके पिता रामप्रसाद नामदेव अपने जमाने के पहलवान थे. घंटों दंड बैठक, कुश्ति का अभ्यास, दांव पेंच सीखना, पसीना बहाना, अनुशासित जीवन उनकी दिनचर्या थी. पहलवानी में जीतकर जब पिता जुलुस के साथ घर आते थे तो उन्हें देखकर उन्होंने इसी प्रकार लाइम लाइट में रहने व सागर से बाहर निकलकर बड़ा आदमी बनने का सपना देखा. मां के प्रति प्रेम ने उनके सपने को साकार करने में मुख्य भूमिका निभाई. गोविन्द नामदेव कहते है प्रकृति जहां ले जाना चाहती है वहां तक पहुंचने के रास्ते तय कर देती है. मैं आज जो कुछ भी हूं मां के प्रेम और पिता के अनुशासन की वजह से हूं. उनके लिये मां का स्थान ईश्वर से भी कई गुना बड़कर है. गोविन्द नामदेव ने दिल्ली में रंगमच अभिनेता के तौर पर करीब 10-12 वर्षो तक संघर्ष किया. दिल्ली में अभिनय का खासा अनुभव प्राप्त कर उन्होंने माया नगरी मुंबई के लिये छलांग लगाई और 90 के दशक में वे देखते ही देखते बेहतर चरित्र अभिनेता के तौर पर विख्यात हो गए. फिल्मों में विलेन की छवि से विलग श्री नामदेव स्वभाव से बेहद सहज, सरल, मृदुभाषी, सकारात्मक और मातृशक्ति को सदैव सम्मान देने वाले कलाकार है. वे अपनी कला से हर दर्शक को चमत्कृत किये हुए है. उनसे **'नवभारत'** ने पिछले दिनों इंदौर में आशीर्वाद ग्रुप के डॉयरेक्टर मुकेश नामदेव के निवास पर कई अनछुए पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की. चर्चा के संपादित अंश प्रस्तुत है.

अभिनेता गोविन्द नामदेव से चर्चारत **'नवभारत'** रीजनल हेड गोविन्द बड़ोने

सवाल- फिल्म इंडस्ट्री में आज के दौर में क्या बदलाव देख रहे हैं.

जवाब-जमीन आसमान की तरह सब कुछ बदला है. तकनीकि स्तर पर व्यापक बदलाव हुए. समाज पर प्रभाव छोड़ने वाली भावना प्रधान फिल्में कम हो गई है. सनसनी खेज फिल्म बनाकर पैसे कमाने की भूख ने सकारात्मकता को ताक पर रख दिया है. सनसनी पैदा कर पैसे बंटोरने का काम अधिक हो रहा है. जहां तक मैंरा सवाल है, मैं कोशिश करता हूं कि अच्छे विषय पर बनने वाली फिल्मों का चयन करू.

सवाल- तेजी से बदल रहै सिनेमा और दर्शकों की पसंद से फिल्मों के भविष्य को किस रूप में देखते है.

जवाब- मनोरंजन समाज की जरूरत है. फिल्मों का भविष्य चिरकाल रहेगा. नई पीढ़ी वर्ल्ड लेवल की फिल्म देखना चाहती है. एडवांस टैक्नालॉजी, एक्शन, स्टोरी टेलेंट के साथ फिल्म मेंकिंग और एक्टिंग का लेबल देखकर अपनी पसंद-नापसंद जाहिर कर रही है.

सवाल- क्या एआई से सहयोगी कलाकारों के लिये रोजगार का संकट खड़ा हो सकता है.

जवाब-आने वाला समय देखने लायक होगा. एआई के लेयर मालूम नहीं पड़ रहे है. फिलहाल तो सहायक कलाकारों के पास बहुत काम है. हम नई तकनीक की मदद तो ले सकते है लेकिन जो कला और भाव एक जीवंत कलाकार के पास मिलेंगे वह एआई नहीं दे पायेगा.

सवाल- साऊथ फिल्मों को सभी जगह काफी सफलता मिल रही है. क्या बालीवुड पर इसका असर पड़ेगा.

जवाब- यह सच है कि साऊथ की फिल्मों में एक्शन ही नहीं प्लॉनिंग, टीम वर्क, अनुशासन, स्टोरी, गहरी सोंच और कठिन परिश्रम दिखता है. वे हर पहलुओं के प्रति चौकन्ने रहते है. बालीवुड भी इन चुनौतियों को स्वीकार कर बेहतर फिल्में बनाने जद्दोजहद करता नजर आ रहा है.

सवाल-पुरानी फिल्मों की सिक्वल काफी बन रहे है. क्या समाज से सब्जेक्ट गायब है.

जवाब- इसका प्रमुख कारण निर्माताओं का सफल फिल्मों के टाईटल को भुनाना है. इन सिक्वल की कहानी अलग होती है. उदाहरण के लिये ओ मॉय गॉड टू बच्चों और पालकों के बीच एक मित्रवत रिश्तें को मजबूत करती है. समाज में कई मुद्दे, विषय है जिनपर भाव प्रधान फिल्में बनाई जा सकती है.

सवाल- फिल्में समाज पर कितना अच्छा और बुरा असर डालती है .

जवाब- अच्छे या बुरे प्रभाव का असर शिक्षा के आधार पर पड़ता है. फिल्म समाज का दर्पण होती है लेकिन अगर इसके माध्यम से नकारात्मकता, वैमनष्यता परोसने का प्रयास किया जाए तो इस बात को वही स्वीकार करेंगे जो कम शिक्षित है. अगर शिक्षा प्रभावी है तो समझ विकसित होने से नकारात्मकता हावी नहीं हो पाती. समाज को शिक्षित करने पर अधिक जोर देना चाहिए . उन्हीं फिल्मों का निर्माण हो जो समाज को मार्गदर्शित कर सके.

सवाल-कई कलाकारों ने अपना नाम बदला है. जाति, समाज छुपाया. आपके मन में भी ऐसा कभी विचार आया था.

जवाब-मैंरे सामने ऐसे कई प्रस्ताव, सुझाव आए. मैंने मुंबई आने के साथ ही पूरी दृढ़ता के साथ यह तय कर लिया था कि वे अपने नाम और अपनी सामाजिक पहचान को नहीं बदलेंगे.

विलेन की भूमिका से कई बार निर्माताओं ने नाम बदलने का दबाव बनाया. उनका कहना था कि आपके नकारात्मक रोल को संत नामदेव से जोड़ा गया तो क्या होगा. उन्होंने कहा कि वे अपनी जड़ों से दूर नहीं होना चाहते है. मैं सोंच कर आया था कि चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन नाम नहीं बदलूंगा. संत नामदेव का वंशज होना उनके लिये बड़े गर्व, स्वाभिमान की बात है.

सवाल- आज की पीढ़ी शार्ट कट अपनाकर संघर्ष से बचती है. क्या कहेंगे.

जवाब-उनका शार्ट कट लांग टर्म में नुकसान पहुंचाता है. जितना अभ्यास होगा उतना ही कला में निखार आयेगा. जितना अधिक सीखेंगे. क्रियेटिव होंगे उतना लाभ मिलेगा. शार्ट कर्ट वालों में नफासत, गहराई की समझ नहीं होती है.

सवाल-नई तकनीक से आगे बड़ रहे नये कलाकार की तुलना में थिएटर में तपे कलाकार को वर्तमान संसाधनों ने कितना प्रभावित किया है.

जवाब-मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूं कि हम तपकर यहां तक पहुंचे है. अगर संसाधन होते तो हमारा गाढ़ा पसीना नहीं बहता और हम वर्षो तक दर्शकों की चाहत नहीं बने रहते. मुझे जो भी रोल मिला मैंरे काम को देखकर ही मिला. कलाकार की पहचान उसकी कला से बनती है किसी तकनीक से नहीं.

सवाल- एनएसडी, एफटीआईआई जैसी संस्थाओ की संख्या बड़ना चाहिए.

जवाब-निश्चित तौर पर अभिनय का प्रशिक्षण देने वाली संस्थाएं बढ़ना चाहिए. नई पीढ़ी में इसके प्रति रूझान भी है और प्रशिक्षण देने वाले अच्छे लोग भी है. सरकार को प्रयास कर थियेटर व प्रशिक्षण संस्थान बढ़ाना चाहिए. थियेटर कलाकार को जीवन जीने की कला भी सिखाता है. खुद को अभिनय के प्रति समर्पित हो चरित्र में समा जाने का तरीका थियेटर सिखाता है.

सवाल-मप्र में फिल्म निर्माण की संभावना क्या है. आप क्या सोचते है.

जवाब-मप्र के पास नैसर्गिक साधन है. सरकार को फिल्म इंस्टिट्यूट खड़ा करना चाहिए. पुणे, बंगाल , साऊथ की तरह और भी स्थानों पर प्रशिक्षण हेतु संस्थान होना चाहिए. इनसे युवाओं को कला निखारने का प्लेटफार्म मिलेगा. मप्र में भोपाल, इंदौर, जबलपुर में फिल्म इंस्टिट्यूट से सैकड़ों बच्चों को लाभ मिलने की अपार संभावनाएं है.

सवाल-क्या फिल्म इंडस्ट्री में कभी गॉड फादर की कमी अखरी.

जवाब- नहीं. हमारी लंबे समय तक सफलता का आधार ही यह था कि हमारा कोई गॉड फादर नहीं था. हम तो टेलेंट की दम पर बड़े और टिके हुए है. अगर कोई गॉड फादर होता तो कब के सिस्टम से बाहर हो चुके होते. ऐसे कई घराने है जिनके बच्चें फिल्म इंडस्ट्री में आगे नहीं बड़ पाए. यह इंडस्ट्री सिर्फ टेलेंट मांगती है.

सवाल- फिल्म इंडस्ट्रीज में क्या चुनौती है और इसका मुकाबला कैसे करते है.

जवाब-मैं एक कलाकार के तौर पर यह मानता हूं कि खुद से बड़ी चुनौती कोई नहीं होती. मैंरा प्रयास रहता है कि दर्शक मुझे हर चरित्र में देखे. मैं नकारात्मक भूमिका तो करता हूं लेकिन लगातार और परंपरागत पात्र का अभिनय करना पसंद नहीं करता . हर बार नया और हर रोल के लिये जी तोड़ मेहनत कर उस चरित्र में आत्मा डालना चाहता हूं. मैंरा यही प्रयास मुझे खुद से जिताता है और अगली चुनौती के लिये तैयार करता है. निर्माता, निर्देशक और दर्शक मुझे अपने इसी समर्पण के कारण बहुत स्नेह,सम्मान देते है. वे अपने परफानेंस की कीमत पर कोई समझोता नहीं करते है.

सवाल-असफलता, अवसाद और संघर्ष से किस प्रकार मुकाबला हुआ.

जवाब-मैंरा जीवन संघर्षों से भरा रहा. असफलता से कभी घबराया नहीं लेकिन शुरूआती दौर में ही अवसाद का शिकार हो गया. सुभाष घई की पहली फिल्म सौदागर में दिलिप कुमार, राजकुमार जैसे बड़े स्टार के साथ काम करने का अवसर मिला.दुर्भाग्य से फिल्म साढ़े तीन घंटे की बन गई. इसे छोटी करने के प्रयास में सुभाष घई ने मैंरा रोल काट दिया. इस फिल्म से मुझे बहुत उम्मींदे थी.

मैंने घर, परिवार, मित्रों को भी इसके विषय में बता दिया था. जब मैंरा रोल कट गया तो मैं अवसाद में आ गया था. सात दिनों तक बेहोश रहा. उस दौर में जीवन संगनी सुधा ने बहुत हिम्मत दी और अनुपम खेर, डेविड धवन, प्रहलाद निहलानी ने सहयोग किया. जिम्मेदारियों ने जगाया. धीरे-धीरे उस पीड़ा से निकला और फिर सोला और शबनम फिल्म करने के बाद मुड़कर नहीं देखा.

सवाल-विलेन के रोल से रियल लाईफ में क्या असर पड़ा.

जवाब-हंसते हुए ! बहुत असर पड़ा. अभिनेत्री माधुरी, फूलन देवी के साथ रेप सीन देखने वाले मैंरे अपने मुझसे दूरी बनाने लगे. मैं जब अपने गांव सागर जाता था तो रिश्तेदार दूर-दूर हो जाते थे .जब तक जान नहीं गये तब तक वे दूर रहे. दूसरा निगेटिव रोल से मैंरा भी मन थक जाता था. मैं मानसिक रूप से परेशान हो जाता था. इन रोल के बाद मैं परिवार को अधिक प्यार करने लगा. भगवान की पूजा अधिक करने लगा. जीवन में और अधिक सकारात्मक होता चला गया.

दर्शकों की गालियां उनके लिये आशीर्वाद बनी...

एक प्रश्न के उत्तर में नामदेव ने कहा कि मैंने हर चरित्र के साथ न्याय किया. दर्शक फिल्म देखते समय विलेन के तौर पर अगर मुझे गालियां देते है इसका मतलब यह है कि मैं उस चरित्र में अपनी आत्मा डाल चुका हूं. एक विलेन को दर्शकों की मिलने वाली गाली ही उसकी सफलता है. उनकी गालियां ही मैंरे लिये आशीर्वाद बनी.

अब अपने मप्र, बुंदेलखण्ड का कर्ज उतारना है...

एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि अब उनका एक ही टारगेट है कि चार-पांच साल फिल्म उद्योग में काम करने के बसउ अपने बुंदेलखंड, अपने मप्र का कर्ज उतारना है. इसके लिये एक इंस्टिट्यूट खड़ा करना है. जो सीखा है, जो जाना है उसे नई पीढ़ी को देना है. सरकार के साथ प्रयास करने का पुराना अनुभव ठीक नहीं रहा इसलिये जो भी करना है अपने प्रयासों से करना है.

रोमांस थ्रिलर 'साइको सैयां' का ट्रेलर हुआ रिलीज !

भारत की अग्रणी मुफ्त, प्रीमियम और विज्ञापन-समर्थित वीडियो स्ट्रीमिंग सेवा एमेज़ॉन एमएक्स प्लेयर ने आज अपनी आगामी रोमांस थ्रिलर सीरीज़ 'साइको सैयाँ' का आधिकारिक ट्रेलर जारी किया . यह कोई सामान्य प्रेम कहानी नहीं है . जो कहानी एक बड़े, फिल्मी रोमांस की तरह शुरू होती है, वह धीरे-धीरे अपने गहरे और डरावने रूप को दिखाती है, जहाँ प्यार जुनून में बदलने लगता है और चाहत घुटन पैदा करने लगती है . इस सीरीज़ में रवि किशन, तेजस्वी प्रकाश और अनुद सिंह ढाका मुख्य भूमिकाओं में हैं . साथ ही, सृष्टि श्रीवास्तव, सुरभि चांदना, वरुण भगत, अश्विनी कालसेकर और यशपाल शर्मा भी अहम किरदार निभा रहे हैं . ट्रेलर में कार्तिक का परिचय कराया गया है, जो उज्जैन का एक शायरी पसंद करने वाला युवक है . उसे लगता है कि उसे आखिरकार वह लड़की मिल गई है, जो उसकी दुनिया को पूरा कर देगी, चारू . उसके लिए प्यार कोई साधारण भावना नहीं है, बल्कि एक बड़ी, गहरी और हर जोखिम उठाने वाली भावना है . लेकिन इस तीव्रता की अपनी कीमत होती है . जैसे-जैसे कार्तिक की भावनाएँ गहरी होती जाती हैं, वैसे-वैसे उसे थामे रखने की चाह भी बढ़ती जाती है . वह उसके पीछे अलग-अलग शहरों तक जाता है, अधिकारों का विरोध करता है और जो भी उसके रास्ते में आता है, उससे टकरा जाता है . जिसे वह प्यार कहता है, वह धीरे-धीरे खतरनाक रूप से कब्जे और अधिकार जताने जैसा दिखने लगता है . उज्जैन, कटनी और जॉर्जिया की पृष्ठभूमि पर आधारित यह ट्रेलर तीखे टकराव, बढ़ती आपराधिक ताकत, भावनात्मक हेरफेर और लगातार कमजोर पड़ते रिश्तों की झलक दिखाता है . रवि किशन अपने प्रभावशाली अभिनय से हर दृश्य में छा जाते हैं और हर मोड़ पर शक्ति का संतुलन बदलते नजर आते हैं, जिससे कहानी और भी गंभीर और भयावह हो जाती है . ट्रेलर खत्म होने के बाद भी एक सवाल लंबे समय तक मन में बना रहता है प्यार आखिर कब नियंत्रण की सीमा पार कर जाता है? : एमेज़ॉन एमएक्स प्लेयर के कंटेंट प्रमुख अमोघ दुसाद ने कहा, 'एमेज़ॉन एमएक्स प्लेयर पर हमारा लगातार प्रयास रहता है कि हम ऐसी कहानियाँ लेकर आएँ जो सिर्फ मनोरंजक ही नहीं, बल्कि भावनाओं का एक अलग और खास मिश्रण भी पेश करें . साइको सैयाँ एक पारंपरिक रोमांस की खूबसूरती से शुरू होती है, जिसे दर्शक पसंद करते हैं, लेकिन जल्दी ही यह एक गहरी मनोवैज्ञानिक कहानी में बदल जाती है .

गंगा माई की बेटियां' में नया लव स्टोरी ट्विस्ट

शो 'गंगा माई की बेटियां', जिसमें शीज़ान खान (सिद्ध) और अमनदीप सिद्धू (स्नेहा) नजर आ रहे हैं, अब अपने सबसे खास और बड़े मोड़ की तरफ बढ़ रहा है . आने वाले एपिसोड्स में दर्शकों को वो पल देखने मिलेगा, जिसका सभी को लंबे समय से इंतजार था, जब सिद्धू आखिरकार स्नेहा से अपने दिल की बात कहेगा . इस सरप्राइज़ को और खास बनाते हुए, स्नेहा भी उसकी बात सुनती है और अपने जज़्बात ज़ाहिर करती है, जिससे स्नेधु की लव स्टोरी की असली शुरुआत हो जाती है . 'गंगा माई की बेटियां' में स्नेहा का किरदार निभा रहीं अमनदीप सिद्धू ने बताया कि इस प्रपोज़ल सीन को कितने खास तरीके से शूट किया गया . उन्होंने कहा, 'सिद्धू ने स्नेहा को महाशिवरात्रि के दिन प्रपोज किया . मान्यता है कि इसी दिन शिव जी और पार्वती जी का विवाह हुआ था, और यही बात स्नेहा और सिद्धू की कहानी से भी जुड़ती है, क्योंकि वो भी इसी पवित्र मौके पर अपने दिल की बात एक-दूसरे से कहते हैं . जब सिद्धू अपने प्यार का इजहार करता है, तो नेहा पहले चौंक जाती है और कहती है कि उसने उसे कभी उस नजर से नहीं देखा . लेकिन बाद में उसे एहसास होता है कि वो भी उससे प्यार करती है . यह सीन बहुत ही खूबसूरत लोकेशन पर शूट किया गया है . इस पूरे सीन को शूट करने में हमें चार दिन लगे . हमने हिमाचल प्रदेश में शूट किया और बाद में पंजाब में भी शूटिंग हुई .

मृणाल ने साझा की सुपर 30 की यादें

अभिनेत्री मृणाल ठाकुर ने हाल ही में दिए एक साक्षात्कार में अपने निजी जीवन से जुड़ा एक रोचक खुलासा किया. आगामी चलचित्र 'दो दीवाने सहर में' के प्रचार के दौरान उन्होंने बताया कि उनके पूर्व प्रेमी ने अभिनेता ऋतिक रोशन जैसा दिखने के लिए 15 से 17 किलोग्राम वजन कम कर लिया था.

मृणाल ने बताया कि यह घटना उस समय की है जब वह चलचित्र 'सुपर 30' में ऋतिक रोशन के साथ अभिनय कर रही थीं. उस दौरान वह एक स्कैंडिनेवियाई युवक के साथ प्रेम संबंध में थीं. उनके अनुसार, पूर्व प्रेमी को यह असुरक्षा महसूस होने लगी थी कि मृणाल आकर्षक और सफल अभिनेताओं के साथ कार्य कर रही हैं. इसी कारण उन्होंने स्वयं को परिवर्तित करने का निश्चय किया. अभिनेत्री ने बताया कि उन्होंने नियमित व्यायाम और संयमित आहार अपनाकर तेजी से वजन घटाया तथा सुदृढ़ शरीर बनाया. हालांकि यह परिवर्तन अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सका. कुछ महीनों बाद उन्होंने व्यायाम करना छोड़ दिया और पूर्व जीवनशैली में लौट गए, जिससे उनका लगभग 20 किलोग्राम वजन पुन: बढ़ गया.

मृणाल के अनुसार, यह पूरा प्रयास उनके पूर्व साथी की व्यक्तिगत असुरक्षा का परिणाम था. उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने कभी भी अपने साथी पर वजन कम करने का कोई दबाव नहीं डाला. उनका मानना है कि किसी भी संबंध में आत्मविश्वास और पारस्परिक विश्वास अत्यंत आवश्यक होता है, अन्यथा असुरक्षा संबंधों को कमजोर कर सकती है.

'दीप दुर्गा' के लिए कुमार सानू की आवाज

कुमार सानू ने आने वाली हिंदी फिल्म 'दीप दुर्गा' के लिए एक बेहद भावनात्मक और दिल को छू लेने वाला गीत रिकॉर्ड किया है. अपनी सुरीली और इमोशनल आवाज़ के लिए मशहूर कुमार सानू ने इस गाने में ऐसी गहराई और संवेदनशीलता भरी है, जो फिल्म की कहानी को और प्रभावशाली बनाती है. मुंबई में रिकॉर्ड किए गए इस गीत को लेकर फिल्म की टीम खासा उत्साहित है. प्रिंस अब्दुल सिद्दीकी और आरके ठाकुर द्वारा निर्मित फिल्म 'दीप दुर्गा' एक धार्मिक और सामाजिक विषय पर आधारित है, जिसे समकालीन अंदाज में प्रस्तुत किया गया है. फिल्म का निर्देशन रंगलाल आर निषाद कर रहे हैं, जो अपनी संवेदनशील कहानी कहने की शैली के लिए जाने जाते हैं.

फिल्म में यजुर मारवाह और तान्या मिश्रा मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे. इनके साथ प्रहवी पाठक, मुस्ताक खान, अजीत पंडित, हेमंत चौधरी, समिधा किरण, खुशबू कमल, साधना गुप्ता, करण ठाकोर, इरफान रजाक खान और राम विश्वकर्मा जैसे कलाकार भी अहम किरदारों में दिखाई देंगे. फिल्म का संगीत जेपी बाबा ने तैयार किया है, जबकि गीत के बोल एसके सचिन ने लिखे हैं. संगीतकार और गीतकार की जोड़ी ने कहानी की भावनात्मक परतों को ध्यान में रखते हुए यह गीत रचा है, जिसे कुमार सानू की आवाज़ ने एक नई ऊंचाई दी है.

नेहा और अंगद के 8 साल पूरे

अलीवुड अभिनेत्री नेहा धूपिया ने पति अंगद बेदी के साथ प्यार और साथ के आठ साल का जश्न मनाया. नेहा धूपिया ने हाल ही में अपने पति अंगद बेदी को खास सरप्राइज़ दिया. नेहा ने उनकी पहली डिनर डेट को दोबारा उसी तरह से तैयार किया, जहां से उनके रिश्ते की शुरुआत हुई थी. इस भावुक पल का वीडियो नेहा ने अपने यूट्यूब चैनल पर शेयर किया, जिसमें दोनों उसी रेस्टोरेंट में नजर आए जहां वे पहली बार डेट पर गए थे.

वीडियो में नेहा, अंगद को पुरानी यादों में ले जाती दिखाई देती हैं. दोनों साथ बैठकर पुरानी बातें करते हैं और सुकून से एक-दूसरे के साथ समय बिताते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे सालों पहले बिताया था. इस खास मौके पर अंगद ने नेहा को वही टी-शर्ट गिफ्ट की, जो उन्होंने अपनी पहली डेट पर पहनी थी. यह तोहफा उन्होंने प्यार, याद और अपने जीवन में नेहा की अहमियत के प्रतीक के रूप में दिया. उन्होंने नेहा को सिर्फ अपनी पत्नी ही नहीं, बल्कि अपने दोनों बच्चों की समर्पित मां के रूप में भी सराहा.

इस भावुक पल में अंगद ने नेहा की तारीफ करते हुए कहा कि वह उनके परिवार में प्यार और मज़बूती लेकर आती हैं और जीवन के हर दौर में उनका साथ देती रही हैं.

अक्षय कुमार ने किया उत्तर-पूर्व का समर्थन

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर प्रसारित पर हो रहे लोकप्रिय टीवी कार्यक्रम 'व्हील ऑफ फॉर्च्यून इंडिया' में अभिनेता अक्षय कुमार ने उत्तर-पूर्व के लोगों के खिलाफ होने वाले भेदभाव और नस्लभेद पर खुलकर बात की.

अक्षय कुमार ने मंच से साफ कहा कि उत्तर-पूर्व के लोग भी उतने ही भारतीय हैं जितना देश का कोई भी नागरिक. कार्यक्रम के दौरान एक प्रतियोगी ने बताया कि उत्तर-पूर्व के लोगों को अक्सर उनके चेहरे और पहचान को लेकर ताने सुनने पड़ते हैं. कई बार उन्हें गलत नामों से बुलाया जाता है और उनका मज़ाक उड़ाया जाता है.इस पर अक्षय कुमार ने बात को गंभीरता से लिया और अपने मेकअप कलाकार किन को मंच पर बुलाया, जो मणिपुर से हैं.

अक्षय कुमार ने कहा, 'मेरे साथ एक लड़का है जो मेरा मेकअप करता है और मेरा ध्यान रखता है. ये हैं किन. 'किन ने मंच पर बताया कि कैसे लोग उन्हें 'चीनी', 'चिंकी', 'मोमो' जैसे शब्दों से बुलाते हैं और उन्हें अलग समझते हैं. यह सुनकर अक्षय कुमार ने कहा, 'आज तुम्हारी बात सुनकर मुझे सच में समझ आया कि ये सब होता है. ' इसके बाद अक्षय कुमार ने देश को सीधा संदेश देते हुए कहा, 'मैं भारत के सभी लोगों से कहना चाहता हूं... उत्तर-पूर्व के लोगों के साथ भेदभाव होता है.लेकिन वो भी उतने ही भारतीय हैं जितना मैं हूं, आप हैं और यहां बैठे बाकी लोग हैं. ' अक्षय कुमार ने यह भी याद दिलाया कि उत्तर-पूर्व के लोगों का देश के लिए बहुत बड़ा योगदान रहा है.